# "आ. विद्यासागर जी के अनन्यतम शिष्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी"

वर्तमान युगपुरूष सन्तशिरोमणि आ. विद्यासागर जी आज अपनी अविरल साधना, कठोर तपश्चर्या एवं प्रबल अनुशासन के बल पर जैन क्षितिज पर एक अप्रतिम सूर्यवत दैदीप्यमान होते हुए दिगदिगन्त में जैन शासन के ध्वजवाहक बने हुए है। आपके इन सद्संस्कारों की झलक आपकी शिष्य परम्परा में सहज ही दृष्टिगोचर हो जाती है। आज आपके समस्त शिष्यगण तपश्चर्या तथा अनुशासनादि के मामले में आपकी ही प्रतिलिपि हैं।

परम पूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज आज आपकी शिष्यावली में प्रमुख रत्नों में से एक हैं। आपकी निर्भीक तथा ओजस्वी वाणी, सरल भाषाशैली तथा जिनागम का तलस्पर्शी ज्ञान व विविध आगम प्रमाणों के आलोक में दिए जाने वाले प्रवचन आपके नाम को ही सार्थक करते हैं।

मुनि श्री प्रमाण सागर जी ने झारखण्ड राज्यान्तर्गत हजारीबाग नगर में खण्डेलवाल दिगम्बर जैन श्रावक श्रेष्ठी श्री सुरेन्द्र कुमार जी सेठी तथा श्रीमति सोहनी देवी के घर बालक नवीन के रूप में जन्म लिया। आपके अतिरिक्त आपके एक भाई और एक बहिन ओर भी हैं। बाल्यकाल से ही धर्म संस्कार आपको अपने माता पिता से विरासत में प्राप्त हुए थे। इन्हीं सत्संस्कारों को वृद्धिंगत करते हुए आपने दिनांक 4 मार्च 1984 को राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) में पूर्ण वैराग्य धारण किया तथा गृहत्याग कर दिया।

आ. श्री के संघ में ही रहते हुए श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र आहारजी में दिनांक 8 नवम्बर 1985 को आ. श्री ने आपको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। दो वर्ष बाद ही अतिशय क्षेत्र थूबौन जी में 10 जुलाई 1987 को आपकी ऐलक दीक्षा हुई तथा महावीर जयन्ती के शुभावसर पर नंगानंग कुमारों की सिद्धभूमि श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी में 31 मार्च 1988 को अत्यन्त पावन जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की गई। इस तरह से बालक नवीन अब दिगम्बर जैन मुनि प्रमाण सागर बने तथा स्वयं तथा औरों का कल्याण मार्ग प्रशस्त करने में लग गये।

**चातुर्मास पर्व** – चातुर्मासकाल दिग. जैन श्रमण का महान आराधनाकाल माना जाता है। पूज्य मुनिश्री प्रमाण सागर जी ने क्षुल्लकदीक्षोपरान्त सन् 1984 से सम्प्रति पर्यन्त कुल 28 चातुर्मास विविध स्थानों पर अत्यन्त कठोर साधना, जैन शासन की अत्यन्त प्रभावना पूर्वक सम्पन्न किये। इनका वर्षवार विवरण अधोलिखित है।

1984 : मढ़ियाजी, जबलपुर (पूज्य आचार्य श्री के साथ)
1985 : आहार जी, टीकमगढ़ (पूज्य आचार्य श्री के साथ)
1986 : पपौरा जी, टीकमगढ़ (पूज्य आचार्य श्री के साथ)
1987 : थूवौन जी (पूज्य आचार्य श्री के साथ)

1988 : मढ़ियाजी, जबलपुर (पूज्य आचार्य श्री के साथ)
1989 : पिण्डई (मण्डला, म.प्र.)
1990 : शहपुरा, भिटौनी, जबलपुर
1991 : सतना
1992 : विदिशा
1993 : अतिशय क्षेत्र रामटेक (गुरुवर के साथ)
1994 : कटनी
1995 : भोपाल
1996 : गोटेगांव, नरसिंहपुर
1997 : सागर
1998 : ललितपुर
1999 : अतिशय क्षेत्र, भोजपुर (भोपाल)
2000 : अतिशय क्षेत्र, उदयगिरि, विदिशा
2001 : टीकमगढ़
2002 : फिरोजाबाद (उ.प्र.)
2003 : अतिशय क्षेत्र, बहोरीबन्द (जबलपुर)
2004 : सतना
2005 : हजारीबाग (झारखण्ड)
2006 : श्री सम्मेद शिखर जी (झारखण्ड)
2007 : श्री सम्मेद शिखर जी (झारखण्ड)
2008 : गया (बिहार)
2009 : श्री सम्मेद शिखर जी (झारखण्ड)
2010 : रांची
2011 : श्री सिद्धक्षेत्र पावापुरी जी

**सामाजिकोत्थान हेतु अवदान** – पूज्य मुनिश्री ने आत्मकल्याण के अलावा जनकल्याण में भी विविध संस्थान रूपी अधोलिखित मील के पत्थर स्थापित किये हैं जो कि आज सम्पूर्ण भारत वर्ष में सफलतापूर्वक संचालित होते हुए पू. आचार्य श्री तथा पू. मुनि श्री का यशवर्धन कर रहे हैं।

1. आ. विद्यासागर प्रबन्ध विज्ञान संस्थान, भोपाल (उच्च शिक्षा का उत्कृष्ट अधिष्ठान)
2. दिग. जैन शीतल विहार न्यास (तीर्थंकर शीतलनाथ की जन्म स्थली पर उदीयमान एक भव्य तीर्थ)
3. आ. विद्यासागर साधर्मी विकास न्यास (ललितपुर, अशोकनगर, गुना, सागर, जबलपुर आदि शहरों में)

4. गौशालाऐं – ललितपुर, टीकमगढ़, कटनी, सतना, अशोकनगर, गुना, सागर, भोपाल, गंजबासौदा।
5. राष्ट्रीय युवा महासंघ – सम्पूर्ण युवाओं एवं युवा संस्थाओं को एकसूत्र में बांधना।
6. श्री सेवायतन मधुबन शिखर जी – (मानव सेवा एवं ग्रामीण विकास तथा शिखर जी की पावनता की सुरक्षा के लिये प्रतिबद्ध)
7. श्री गुणायतन मधुबन शिखर जी – जैन दर्शन के अन्तर्गत जीवात्मा के शिखर तक की यात्रा का सजीव चित्रण आधुनिक तकनीक द्वारा।

**कलम के जादूगर –**

पू. मुनि श्री के व्यक्तित्व में जितना आकर्षण एवं जादू है, उतना ही जादू उनकी लेखनी में है। आप विविध भाषाभाषी हैं तथा हिन्दी, मराठी, अंग्रजी, संस्कृत, प्राकृतादि विविध भाषाओं पर आपका पूर्णाधिकार है। आपकी यह प्रतिभा तथा जिनवाणी का तलस्पर्शी ज्ञान आपकी कृतियों में दृष्टिगोचर होता है।

**महत्वपूर्ण कृतियां –**

| | | |
|---|---|---|
| **जैन धर्म दर्शन** | – | हिन्दी, मराठी (अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशनाधीन) |
| **जैन तत्व विद्या** | – | हिन्दी, मराठी (अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशनाधीन) |
| **प्रवचनसंग्रह** | – | दिव्य जीवन का द्वार, अंतस् की आंखें, धर्म जीवन का आधार, पाठ पढ़े नवजीवन का, जैन सिद्धान्त शिक्षण, ज्योतिर्मय जीवन, धर्म साधिये जीवन में, तीर्थंकर, मर्म जीवन का, कर्म जीवन का, लक्ष्य जीवन का। |

इस प्रकार पू. मुनि श्री प्रमाण सागर जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन भी स्वपर कल्याण में लगा रखा है। वे आज लेखन, प्रखर चिन्तन और तार्किक प्रवचनों से समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना में सतत् प्रयत्नशील हैं। एक व्यसनमुक्त समाज की रचना तथा युवा वर्ग को धर्म से जोड़ना और उनको सन्मार्ग पर लगाना आपका श्रेष्ठ विचार है। आज आपके 25 वें रजत दीक्षा जयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर मैं पू. गुरुचरणों में बारम्बार नमोस्तु कुसुम अर्पित करते हुए यह भावना भाती हूं कि आप शीघ्र ही अपनी आत्मा का कल्याण कर परमपद मोक्ष सुख की प्राप्ति करें।

**संकलन**
**सुशीला पाटनी**
आर. के. हाऊस
**मदनगंज–किशनगढ़**